विचार बिन्दु

प्रकृति का तमाशा भी ख़ूब है। सृजन में समय लगता है जबकि विनाश कुछ ही पलों में हो जाता है। –ज़क़िया ज़ुबैरी

सीकर बस दुखान्तिका--महीने में 5 ,4 ऐसी भीषण दुर्घटनाएं, कुछ तो किया ही जा सकता है

29 अक्टूबर 2024 की लक्ष्मणगढ़-सीकर में भयानक बस हादसा हुआ।12 लोगों की अकाल मौत हुई। मीडिया में जो विवरण सामने आया है उस से एक बात साफ है कि यह, उस समय बस चला रहे ड्राइवर की घोर लापरवाही का परिणाम है। ओर कारणों की स्पष्टता यथा बस की फिटनेस, ड्राइवर की योग्यता व उसके लाइसेंस की वैधता, क्षमता से अधिक सवारी आदि तो विस्तृत जांच में सामने आएंगे।

लेकिन यह कोई अकेली घटना है क्या? देश और प्रदेश में आए दिन इस प्रकार की भयंकर दुर्घटनाएं हो रही है। आप गूगल सर्च करिए, हर प्रान्त, हाइवे पर घटी भीषण सड़क दुर्घटनाओं का विवरण मिल जाएगा। 2,5,10 दिन में हम सभी व हुक्मरान सीकर दुर्घटना को एक ओर घटना मान कर शान्त हो जाएंगे।

पाठकों को याद दिला दूं, आज से करीब 30 वर्ष पूर्व ऐसी ही एक भयंकर बस दुर्घटना चितौड़ में हुई थी। उसी समय उदयपुर जयसमंद झील में एक नाव भी डूबी थी जिसमें शायद 70 लोग झील में डूब गए थे। बड़ा शोर मचा, बयानबाजी हुई। नियमों में सख्त परिवर्तन किया जाएगा आदि आदि। महीने दर महीने इस प्रकार की दुखान्तिकाओं का सिलसिला घटने के बजाए बढ़ता ही रहा है।

नियमों में परिवर्तन का एक ड्राफ्ट तैयार कर, राज्य सरकार (वो जो भी हो, जहां भी हो) के समक्ष रखा गया। उस में अन्य बातों के साथ साथ बस के मालिकों पर भी आपराधिक दायित्वों का सुझाव था क्योंकि अप्रशिक्षित ड्राइवर से या अनफिट वाहन चलवाना अपराध खयों न हो? किंतु परिवहन ऑपरेटर्स की प्रभावशाली लॉबी के आगे सरकार बेबस रही होगी। प्रसंगवश पाठकों को याद दिला दूं कि प्रदेश के अलवर जिले में, किसी समय किसी की आला व्यक्ति की सरपरस्ती में हजारों हजार ड्राइविंग लाइसेंस बिना जांच पड़ताल के जारी कर दिए थे। 2,4,5 दिन की अखबारी सुर्खियों के बाद, मामला शांत!!

छोटे-बड़े कस्बों में सुबह 6 बजे से 9 बजे के बीच किसी सड़क पर जाती स्कूल बसों को ध्यान से देखिए। शायद सभी देखते भी होंगे। अधिकांश चालक अंधाधुंध स्पीड पर गाड़ी चलाते है, मोड़ों पर भी स्पीड कम नहीं करते। अधिकांश ड्राइवर लगातार मोबाइल फोन पर बात करते चलते है। खतरनाक व गलत तरीके से ओवरटेक करते है और पैदल सवारियों को वाहन रोक कर या स्पीड कम करके रास्ता देना तो जैसे तौहीन समझते है।

आइए, कुछ बहुत साधारण साधारण बातों पर विचार करें। छोटे-बड़े कस्बों में सुबह 6 बजे से 9 बजे के बीच किसी सड़क पर जाती स्कूल बसों को ध्यान से देखिए। शायद सभी देखते भी होंगे। अधिकांश चालक अंधाधुंध स्पीड पर गाड़ी चलाते है, मोड़ों पर भी स्पीड कम नहीं करते। अधिकांश ड्राइवर लगातार मोबाइल फोन पर बात करते चलते है। खतरनाक व गलत तरीके से ओवरटेक करते है और पैदल सवारियों को वाहन रोक कर या स्पीड कम करके रास्ता देना तो जैसे तौहीन समझते है। इतना ही नही यदि पैदल सवारी हाथ देकर सड़क करने का प्रयास करे तो इतनी जोर से हॉर्न बजाते जाते है, मानों आक्रोशित होकर कह रहे हो, क्या कर रहे हो, धैर्य रखो, पहले मुझे निकलने दो, जल्दी है!!!! नहीं, गलत कहा है क्या?? अब देखिए,चौराहे या तिराहों पर या किसी भी मोड़ पर बसें सवारी उतारने,चढ़ाने के लिए इस प्रकार खड़ी की जाती है कि दूसरे पैदल या वाहन सवार आदमी को बस के दांए-बांयें से आता कोई वाहन नहीं दिखेगा।

कस्बों में मिनी बस, दूसरी बसें व अन्य यात्री वाहन सड़क पर चलते हुए, ब्रेक लगाकर, बीच सड़क पर गाड़ी रोक कर सवारी उतरते है, कितना रिस्की है, आप समझते तो जरूर होंगे, इन वाहनों के ड्राइवर भी समझते तो है किंतु जल्दी निकलना है, आगे की कोई सवारी किसी ओर वाहन में न चली जाए??

व्यस्त मार्गों पर स्लिप लेंस का प्रावधान कर तो दिया किन्तु अधिकांशतः सीधे या दांए सड़क क्रॉस करने वाले स्लीप लेंस खाली ही नही छोड़ते। ऐसी व्यस्त जगहों पर तो यातायात पुलिस के लोग भी खड़े मिलते है।

अब अगर किसी में धैर्य हो तो मृतप्राय आरटीआई कानून के अंतर्गत इस यह सूचना प्राप्त करले कि वाहन चलाते फोन पर बात करते हुए कितने ड्राइविंग लाइसेंस निरस्त हुए, व्यस्त मोड़ों पर है स्पीड में मुड़ते हुए या सीधे निकलते हुए कितने चालान हुए, कितने ड्राइविंग लाइसेंस निरस्त हुए???

अब आप यह बताओ कि क्या पुलिस, यातायात विभाग के निचले स्तर से लेकर वरिष्ठ अधिकारी और वो ही क्यों, मंत्री, विधायक इन सब बातों से अनभिज्ञ है???? यदि आप ऐसा मानते हैं तो बोलो जयश्री---।

चलते चलते इस पर भी विचार करना कि अनफिट वाहन चलवाने या वेल्ट्रेण्ड ड्राइवर न रखकर वाहन चलवाने या लंबी लंबी दूरी के ट्रक व सवारी गाड़ियों पर ड्राइवरों को बिना पर्याप्त रेस्ट दिए वाहन चलवाने के लिए वाहन मालिकों पर आपराधिक दायित्व आयत होना चाहिए या नहीं????

ओर अंत में अकेले वाहन चालक ही नही, हम नागरिक भी बराबर के से दोषी है--हम हमारे बच्चों को स्कूल के लिए समय पर तैयार नहीं करेंगे, दुकान-दफ्तर जाने के लिए पर्याप्त समय पहले रवाना नहीं होंगे, स्कूलों वाले बच्चों को लेट करने वाले वाहन चालकों की शिकायत कर आर्थिक दण्ड दिलवाएंगे, नियम तोड़ने में श्रमशंका नहीं करेंगे,100,50 का नोट दिखाकर या किसी जानकार रशुखदार का नम्बर मिलाकर पुलिस वाले को फोन पकड़ाते हिचकिचाएंगे नही तो सुधार की गति भी कछुवा चाल ही होगी और हम लोग यों ही गिल्वे शिकायत करते रहेंगे---क्यों गलत कहा??? ओर यह के दृश्य शहरों में, बाहर के हाइवेज, दूसरी सड़को पर आम देखे जा सकते है।

–महावीर सिंह,
पूर्व आईएएस

राशिफल गुरूवार 31 अक्टूबर, 2024

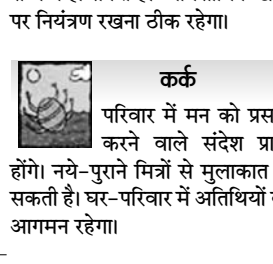

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, चित्रा नक्षत्र रात्रि 12:45 तक, विष्कुम्भ योग प्रातः 9:50 तक, शकुनिकरण दिन 3:53 तक, चन्द्रमा आज दिन 11:16 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज दीपावली छोटी है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 8:02 तक, चर 10:48 से 12:10 तक, लाभ-अमृत 12:10 से 2:56 तक, शुभ 4:18 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:40, सूर्यास्त 5:41

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। धन खर्च पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। आज महत्वपूर्ण मामलों में उचित सफलता मिल सकती है।

धनु
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

तुला
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

वृश्चिक
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। आज महत्वपूर्ण कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

पांच दिन उत्सव और पर्व दीपावली

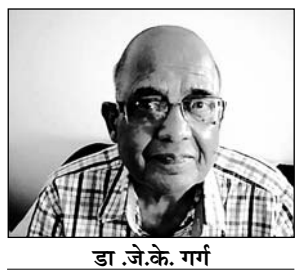

डा .जे.के. गर्ग

भारतवर्ष के अंदर दीपावली पाँच दिन का पर्व और उत्सव को कार्तिक कृष्णा तेरस से कार्तिक शुक्ल दूज तक हर्षोल्लास के साथ धूमधाम से मनाई जाती है जिन्हें धनतेरस, नरक चतुर्दशी, अमावस्या दीपावली, बाली प्रतिपदा गोवर्धन पूजा एवं यम द्वितीया या भाई दूज के रूप में जाना जाता है। इन सभी दिनों के बारे में अनेक किंवदन्तियाँ पौराणिक और धार्मिक मान्यता है। उल्लेखनीय महाराष्ट्र में दिवाली का पर्व छह दिनों तक मनाया जाता है यहाँ दिवाली वासु बरस या गौ वास्ता द्वादशी के साथ शुरू होता है और भैया दूज के साथ समाप्त होता है ।

पांच दिन के पर्व दिवाली का प्रथम दिन धनतेरस या धनवंतरी त्रयोदशी के रूप में मनाया जाता है धनतेरस का अर्थ है धन एवं संपत्ति है। धनतेरस को देवताओं के चिकित्सक भगवान धन्वंतरि की जयंती के रूप में मनाया जाता है, पौराणिक मान्यताओं के मुताबिक भगवान धनवंतरी समुद्र मंथन के दौरान अवतरित हुए थे । इस दिन को शुभ मानते हुए लोग बर्तन, सोना-चादीं जेवरात आदि खरीदना शुभ और मंगलकारी मानते हुए इसकी खरीदारी करते हैं। पांच दिन के पर्व दिवाली के दूसरे दिन चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी के रूप में मनाया जाता है, कुछ स्थानों पर इसको छोटी दिवाली भी कहते हैं । कहा जाता है कि ईसी दिन भगवान कृष्ण ने राक्षस नरकासुर को मारा था। नरक चतुर्दशी को बुराई एवं अंधकार पर अच्छाई एवं प्रकाश की विजय के संकेत के रुप में मनाया जाता है। छोटी दिवाली के दिन लोग अपने घरों के आसपास बहुत से दीपक जलाते है और घर के बाहर रंगोली बना कर खुशी का इजहार करते है। नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले स्नान करने का महत्व गंगा के पवित्र जल में स्नान करने के समकक्ष माना जाता है। पांच दिन के पर्व के तीसरे दिन अमावस्या को दीपावली के यूप में मनाया जाता है इस दिन सभी घरों, व्यापारिक प्रतिष्ठान, कार्यस्थलों, ऑफिसों में धन-संपदा की देवी लक्ष्मी माता की विधि-विधान से पूजा-अर्चना की जाती है और विपत्ति-कष्ट के निवारण के लिये प्रथम देव भगवान गणेशजी की भी पूजा की जाती है। ऐसी मान्यता है कि माता लक्ष्मी घर-परिवार में सुख-समृद्धि प्रदान कर समस्त परिजनों को आशिर्वाद देकर उन पर धन-धान्य की वर्षा करेंगी ।

नगर, गलियों, घरों, सार्वजनिक जगहों पर दिये की रोशनी से अमावस्या के अँधेरे को शीतल पूर्णिमा की चांदनी मे बदल दिया जाता है । पांच दिन के पर्व के चौथे दिन बाली प्रतिपदा और गोवर्धन पूजा के रूप में मनाया जाता है। उत्तर भारत में इसका गोवर्धन पूजा (अन्नकूट) के रूप में मनाया जाता है। भगवान कृष्ण द्वारा इंद्र के गर्व को पराजित करके लगातार बारिश और बाढ़ से बहुत से लोगों (गोकुल वासी) और मवेशियों के जीवन की रक्षा करने के महत्व के रुप में इस दिन जश्न मनाते है। अन्नकूट मनाने के महत्व के रुप में लोग बडी मात्रा में भोजन की सजावट(कृष्ण द्वारा गोवर्धन पहाड़ उठाने प्रतीक के रुप में) करते है और पूजा करते है। यह दिन कुछ स्थानों पर दानव राज बाली पर भगवान विष्णु (वामन) की जीत मनाने के लिये भी बाली-प्रतिपदा के रूप में मनाया जाता है। कुछ स्थानों जैसे महाराष्ट्र में यह दिन पड़वा या नव दिवस (रूप में भी मनाया जाता है और सभी पति अपनी पत्नियों को उपहार देते है। गुजरात में इसको नये दिन के रूप में भी मनाते हैं यह विक्रम संवत नाम से कैलेंडर के पहले दिन के रूप में मनाया जाता है। दिवाली पर्व के पांचवे दिन को यम द्वितीया या भाई दूज के रूप में मनाते हैं इस दिन को भाई-बहनों के अटूट स्नेह बंधन के पर्व में जाना जाता है इस पर्व के पीछे मृत्यु के यम की कहानी है। आज के दिन यमराज अपनी बहन यामी यमुना से मिलने आये और अपनी बहन द्वारा उनका आरती के साथ स्वागत हुआ और यम एवं यामी ने साथ-साथ में खाना भी खाया। यम ने अपनी बहन यामी को अनेकों उपहार भी दिये। लोग यम द्वितीया या भाई दूज को बहन-भाई के पारस्परिक प्रति प्रेम और स्नेह के रूप में मनाते है।

माता लक्ष्मी की स्थाई कृपा प्राप्त करने का अचूक इलाज

दीपावली के पावन पर्व सौभाग्य धन, सम्पन्नता, सुख खुशी की कामना रखने वाले सभी व्यक्ति माता लक्ष्मी जी पूजा अर्चना और आराधना श्रद्धा के साथ करते हैं। साधारणतया हम अपने-अपने घरों की बाहरी सफाई करते हैं रंग-रोशन भी करवाते हैं, घरों को सजाते भी हैं । हम दीपावली पर अपने आप से सवाल पूछें क्या हमारा दिल सभी अवगुणों यानी क्रोध, ईर्ष्या, लोभ-लालच, असीमित इच्छा, घ्रणा, राग-द्वेष छल-कपट से मुक्त है ? अधिकांश लोगों की अंतरात्मा से यही आवाज आयेगी-नहीं-नहीं । क्योंकि कमोपेश इनमें बहुत से दुर्गुण हमारें दिलों में मोजूद हैं । याद रखिये जब तक हम अपनी आत्मा एवं दिल को इन दुर्गुणों से मुक्त नहीं करंगे माँ मोक्ष लक्ष्मी हमारे घर मे प्रवेश नहीं करेगी । यह मान कर चले जिस दिन हमने अपनी आत्मा और -दिल को इन दुर्गुणों से मुक्त कर लिया उसी क्षण से माँ मोक्ष लक्ष्मी आप के घर मे सदेव के लिए निवास करेंगी ओर आपका घर परिवार हमेशा धन सम्पदा खुशियों के हजारो दीपों से रोशन होगा। माँ लक्ष्मी उन्हें पसंद करती है जो रचनात्मक सोच रखते है, जिनके पास एक कार्य योजना है, सब के सहयोग से काम करते हैं,सभी की मदद करते है, खुद खुश रहते हैं और अन्य को भी खुशी देते हैं, अच्छे काम और दूसरे की भलाई के लिए प्रयास करते हैं। गरीबों की मदद करते हैं, किसी भी उपेक्षा ओर अपमान नहीं करते हैं और ना ही किसी से कोई अपेक्षा रखते हैं और जीवन में हुए हर परिवर्तन को दिल से स्वीकार करते है । किसी भी उपेक्षा ओर अपमान नहीं करतें हैं, सच सुनते हैं, सच बोलते हैं तथा हमेशा मीठी वाणी बोलते हैं, सही काम करते हैं एवं किसी के लिए बुरा नहीं करते हैं और जीवन मे आई मुसीबतों का हिम्मत के साथ मुकाबला करते है तथा निष्काम भाव से सात्विक कर्म करते हुए उनको प्रभु को अर्पण कर देते।

याद रखे सच्चा सुख केवल सत्य से ही मिलता है, यह भी संभव है की इस प्रक्रिया मे आपको दुःख का भी सामना करना पड़े । यह भी सत्य है कि जहां पर बुद्धीजीवी का अपमान होता है उस स्थान पर लक्ष्मीजी निवास नहीं करती है । माता लक्ष्मी वहीं निवास करती है जहाँ गरीबों की मदद करने ओर उनकी सेवा करने की भावना होती है, जहाँ मूर्खो और पाखंडियों को सम्मानित नहीं किया जाता है, जहाँ लोगों जरुरतबंध स्त्री-पुरूषों को कभी खाली हाथ नहीँ लोटाया जाता है, जहाँ बच्चों को भगवान के तुल्य मान कर उन्हें प्यार दिया जाता है, जहां पारिवारिक-क्लेश नहीं होते है और जहाँ पति-पत्नी दो शरीर एवं एक आत्मा के रूप में रहते हैं। निसंदेह लक्ष्मी जी वहां कभी नहीं जाती जहां पर गंदगी होगी ओर लोग आलसी-कामचोर, घमंडी, क्रोधी होंगे एवं जहाँ पर महिलाओं-बच्चो का सम्मान नहीं होगा । माँ लक्ष्मी उनसे भी नाराज होती हैं जो शंकालु, परिवर्तन से डरने वाले, डर में ही जीने वाले, डरपोक एवं जो सिर्फ अपने लिए ही धन इकट्ठा करने वाले होते हैं ।

धर्म शास्त्रों में उल्लेखित मान्यता निर्विवाद और सही है, किन्तु आज के माहौल को देख आत्मा स्वयं से सवाल करती है और तर्क वितर्क भी करती है क्यों माता लक्ष्मी आज धन-संपदा से ईमानदारों, बुद्धीजीवियों, सत्यवान दीयों और कानून में विश्वास रखने वालों के बजाय भ्रष्टाचार अनाचार मे लिप्त, सजायाप्ता स्त्री-पुरुष, जनसाधारण का शोषण करने वाले लोगों को उपकृत करती दिखाई दे रही है, क्यों समाज के कंटक, गुंडे लोग ऐशोआराम की जिंदगी जी रहें हैं? क्यों बुद्धीजीवियों को अनपढ़ों के आदेश मानने पड़ रहे हैं? क्यों सत्यवादी आदमीयों के लिये अपनी न्यूनतम जरूरतों को पूरा करने के लिये भी संघर्ष करना पड़ रहा है ? क्यों जुमलेबाज लोगों को मूर्ख बना कर अपना हित साध पाने में सफल हो रहे हैं? सच्चाई तो यही है कि परमात्मा के न्याय में देरी तो हो सकती है किन्तु देर सबेर न्याय जरूर मिलता है । प्रभु ईसामसीह कहते थे कि सुई की नोक के अंदर ऊँट तो भले ही प्रवेश कर सकता है किन्तु गलत तरीकों से धन कमाने वाला व्यक्ति कभी भी स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता है उनको तो माया लक्ष्मी भ्रमित करती है मोक्ष दायनी माँ लक्ष्मी उनसे कोसों दूर रहती है और ऐसे धनिक मनुष्य को जीवन के किसी पड़ाव पर असाध्य रोगों बीमारियों से और अन चाही तकलीफों के शिकार होते हैं उनके परिजन धन की अधितकता की वजह से पथ भ्रष्ट होकर नारकीय जीवन जीते हैं। माने या नही माने ऐसे आदमीयों के परिजन परिवार की प्रतिष्ठता को कलंकित करते है। गुरु नानक देव जि ने बतलाया था कि नेकी की कमाई ही सच्चा सुख-सम्पनता प्रदान करती है।

–डा .जे.के.गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा, जयपुर

दीपावली की रामा-श्यामा करने बाजार में पैदल निकले विधायक धनकड, जगह-जगह हुआ स्वागत

पावटा।विराटनगर विधानसभा क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड ने सोमवारको पावटा प्रागपुरा नगरपालिका क्षेत्र व मंगलवार को मण्ढा, राजनौता, संतोषी माता मंदिर, कारोली, हापोडा स्टैंड, पाछूंडाला, प्रेमनगर व बुधवार को बड़नगर, तुलसीपुरा, ठिकरिया, जयसिंहपुरा, लुहाकणा खुर्द, लुहाकणा कलां, किशनपुरा, श्री श्री 1008 बाबा बालकनाथ आश्रम अहीर की बावडी मे सुबह 10 बजे दीपावली के पावन पर्व पर रामा-श्यामा करने बाजार में निकले।

विधायक कुलदीप धनकड ने बाजार में पैदल धूम कर रामा श्यामा की ।

इस दौरान उनका जगह-जगह व्यापारियों, व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधियों और समाजसेवियों ने स्वागत किया।विधायक कुलदीप धनकडने दीपावली की रामा-श्यामा कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए मुख्य बाजारों में व्यापारियों, व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधियों और समाजसेवियों व ठामीणों से रामा श्यामा की। इस दौरान उनका व्यापारियों ने जगह-जगह पर माला साफा पहनकर भव्य स्वागत-सम्मान किया। पद यात्रा के दौरान धनकड ने जहां बुजुर्ग महिलाओं और पुरुषों से आशीर्वाद लिया। वहीं बच्चों को आशीर्वाद के साथ उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं भी दीं।

मालपुरा में व्यापारियों को मिलेगा पुरस्कार

मालपुरा (निस) । दीपावली के पावन पर्व पर मालपुरा शहर में विशेष सजावट करने वाले व्यापारियों को नगरपालिका प्रशासन की ओर से नगद पुरस्कार दिया जायेगा । नगरपालिका अधिशाषी अधिकारी ने दुकान सजाओं ईनाम पाओ की घोषणा कर बुधवार को आदेश जारी करते हुये व्यापारियों को सजावट के लिये किया प्रेरित। विशेष सजावट का मुल्याकंन करने के लिये छः सदस्यों की चयन कमेटी का गठन किया गया। जिसमे तहसीलदार पवन कुमार चौधरी,पालिका के अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी जयनारायण ,वरिष्ठ नागरिक त्रिलोक चन्द विजय,दीपोत्सव आयोजन समिति के संयोजक डॉ. राजकुमार ,हिन्दु समरसत्ता मंच के एडवोकेट कृष्णकांत जैन व रामजीलाल शर्मा को शामिल किया गया। प्रथम पुरस्कार विजेता को 5100०० रूपये एंव द्वितीय विजेता को 2100०० रूपये एंव तृतीय विजेता को 1100०० रूपये का पुरस्कार दिया जायेगा। इस बार पांच दिवसीय दीपोत्सव के तहत शहर के प्रमुख चौराहो पर भजन संध्या,अलगोजा पार्टी,मशक्क बीन,के साथ-साथ सुभाष सर्किल पर राधाकृष्ण व हनुमान जी की संजीव आकर्षण का केन्द्र रहेगी।

कलक्टर ने स्वच्छ वायू प्रदूषण के उपायों को देखा

वायु प्रदूषण के नियंत्रण संबंधित एजेंसियों द्वारा धरातल किये जा रहे कार्यो

अलवर । जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने शहर में वायु प्रदूषण के नियंत्रण हेतु संबंधित एजेंसियों द्वारा धरातल पर किये जा रहे कार्यों का मौका निरीक्षण किया। उन्होंने वायु प्रदूषण के चिन्हित हॉटस्पॉट क्षेत्र ट्रांसपोर्ट नगर, हनुमान सर्किल, 200 फिट रोड, टेल्को सर्किल, पुराना इंडस्ट्रियल एरिया आदि के आस-पास के क्षेत्र का दौरा किया।

उन्होंने निर्देश दिये कि शहर की वायु गुणवत्ता हेतु नगर निगम, यूआईटी, पीडब्लूडी, रीको एवं प्रदूषण नियंत्रण मंडल तालमेल रख कर शहर की वायु गुणवत्ता एवं स्वच्छता हेतु चिन्हित हॉटस्पॉट पॉइंट पर निरोधात्मक गतिविधियां करावें जिसमें रोड़ साइड पानी का निरंतर छिडकाव, रोड़ डस्ट को हटवाने के साथ रोड़ साइड इंटरलोकिंग टाइल्स लगवाना तथा पौधारोपण आदि के कार्य कराये जाये। कचरा किसी भी स्थिति में नहीं जले इसे सुनिश्चित करावें। उन्होंने वायु प्रदूषण के हॉटस्पॉट के रूप में चिन्हित अग्रसेन सर्किल से हनुमान सर्किल वाली सडक एवं वहां से सूर्य नगर लिंक रोड तक नगर विकास न्यास के द्वारा, पुराना औद्योगिक क्षेत्रा ईटाराना पुलिया से सामोला सर्किल व कृषि उपज मंडी मोड से रेल्वे स्टेशन तक तथा ट्रांसपोर्ट नगर की मैन सडक पर नगर विकास न्यास द्वारा तथा टेल्को सर्किल से भूगोर बाईपास तक रिडकोर द्वारा रोड साइड डस्ट को हटाने, इंटर लॉकिंग कार्य कराने तथा पौधारोपण कराने के निर्देश दिये। उन्होंने यूआईटी की सचिव को निर्देश दिये कि टेल्को सर्किल के पास एक प्रवेश द्वार तथा अन्य सौन्दर्यकरण के प्रस्तावित कार्यों की कार्ययोजना बनाए। इस दौरान यूआईटी की सचिव सुश्री धाईगुडे स्नेहल नाना, नगर निगम आयुक्त जितेन्द्र सिंह नरूका, पीडब्लूडी के अधीक्षण अभियंता श्री भूरी सिंह, प्रदूषण नियंत्राण मण्डल के क्षेत्रीय अधिकारी श्री दिपेन्द्र झरवाल, यूआईटी के अधिशाषी अभियान श्री योगेंद्र वर्मा, नगर निगम के राजस्व अधिकारी युवराज मीणा सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

ईसा से 300 साल पहले से जारी हो रहे हैं मां लक्ष्मी अंकित सिक्के

भारत में आए विदेशी शासक इंडो सीथियन राजाओं ने मां लक्ष्मी के गजलक्ष्मी वाले सिक्के जारी किए थे।

कोटा, (निसं)। दीपावली पर हर घर में ऐश्वर्य व वैभव की देवी मां लक्ष्मी की पूजा होती है। साथ ही ज्यादातर परिवार मां लक्ष्मी के अंकित सिक्के खरीदते हैं और उनका घर धन-धान्य से परिपूर्ण रहे इसकी कामना के साथ पूजा के उपरांत उन सिक्कों को सहेज कर रखते हैं। वरिष्ठ मुद्रा विशेषज्ञ (न्यूमिजमाटिक्स) एडवोकेट शैलेश जैन कहते हैं कि दीपावली पर लक्ष्मी पूजन के लिए सिक्के खरीदने की परंपरा रियासतकाल से चली आ रही है।

कई हिंदू शासकों के कालखंड में यह सिक्के तो जारी किए ही गए है।मुस्लिम शासक मोहम्मद गोरी ने भी मां लक्ष्मी अंकित सिक्के जारी किया था और इसके प्रमाण आज भी मौजूद हैं जिन्हें म्यूजियम में सहेजकर रखा गया है। भारत में आए विदेशी शासक इंडो सीथियन राजाओं ने मां लक्ष्मी के गजलक्ष्मी वाले सिक्के जारी किए थे। इनमें राजा एजायलिस का एक सिक्का यूनाइटेड किंगडम के एशमोलियन म्यूजियम और दूसरा ब्रिटिश म्यूजियम में रखा है। उन्होंने बताया कि मां लक्ष्मी अंकित सिक्कों को ऐश्वर्य, समृद्धि और खजाने में संपन्नता के लिए हिंदू शासकों ने सहेजकर रखा। यही रीत कई मुस्लिम शासकों ने भी अपनाए और मां लक्ष्मी पर सिक्के जारी किए क्योंकि लक्ष्मी जी को सदियों से ऐश्वर्या, सौभाग्य की देवी के रूप में पूजा जाता रहा है। जैन ने बताया कि करीब 2300 साल पहले भी मां लक्ष्मी की मूर्ति अंकित सिक्के जारी हुए थे। न्यूमिजमाटिक्स एडवोकेट शैलेश जैन ने बताया कि ईसा से 300 साल पहले यानी 2300 साल पूर्व भी मां लक्ष्मी की मूर्ति अंकित सिक्के मिले हैं। लगभग इसी कालखंड में माता लक्ष्मी पर सिक्के या मुद्रा जारी होना शुरू हुआ था। न्यूमिजमाटिक्स जैन का कहना है कि उज्जैन के सिक्कों पर गज लक्ष्मी का अंकन मिलता है। ये सिक्के भी 2200 से 2300 साल पुराने हैं।

इसमें मां लक्ष्मी कमल पर आसीन पर दिखती हैं तो कुछ सिक्कों में बैठी नजर आती हैं। साथ ही इसमें मां लक्ष्मी के दोनों तरफ हाथी दिखते हैं। ये दोनों हाथी अपनी सूंड को ऊपर उठाए वैभव की वर्षा करते हैं। कुषाणवंश के राजा कनिष्क के समय के सिक्के पर एक देवी नजर आती हैं जो गेहूं की बालियां लिए खड़ी दिखती हैं जिन्हें इतिहासकार मां लक्ष्मी मानते हैं। इसी तरह वर्तमान में भी लक्ष्मीजी का यही स्वरूप देखने में आता है। पांचाल राज्य में फाल्गुनी मित्र ने पहली शताब्दी के दौरान सिक्का जारी किया था।